om-11 INITIAL_Page 1 and 2 12-08-2014 11:59 Page 5

बिलीफ या मान्यता या विश्वास

सभी एक बात को लेकर बड़े ही संजीदा हैं कि मान्यताएं कैसे बनती हैं उसका उद्गम कहाँ से होता है इसके पहले वाले श्रृंखला में (आकर्षण बनाम प्रेम) में लेखक द्वारा मान्यता को परिभाषित किया गया था लेकिन पाठक गण चाहते हैं कि मान्यताएं या बिलीफ को और गहराई से हमारे सामने रखा जाए।

इसलिए इस बार बिलीफ अथवा मान्यता की दोबारा एक श्रृंखला शुरु हो रही है, शायद मैं आप सबके विश्वास पर खरा उतर सकूं।

कई बार बार एक प्रश्न सबके अंदर कौंधता है कि बिलीफ क्या है? लॉ ऑफ अट्रैक्शन का सिद्धांत यही तो कहता है कि वो आप प्राप्त नहीं करते जो आप चाहते हैं, आप वो प्राप्त करते हैं जो आप हैं। आप क्या हैं, आप अपने बिलीफ ही तो हैं जो आपने अपने बारे में मान रखा है कि ''मैं ऐसा ही हूं ''।

विश्वास और अंधविश्वास में थोड़ा सा फर्क है या यूं कहें कि एक पतली सी लाइन है। यदि कमरे में अंधेरा है तो उस चीज़ को आसानी से नहीं ढूंढ सकते हैं। ऐसा ही मन है जब वो अंधेरे में होता है तो एक तरह से वह पैरालाईज़्ड है, जैसे ही वह लाइट में आता है यानी नॉलेज अथवा ज्ञान होगा तथा उसे उसका अनुभव होगा तो आप उसे जल्दी ढूंढ लेंगे।

अब मैं आपको एक रीयल लाइफ सिच्युएशन देता हूं।

एक लड़का है जिसके अंदर चार तरह की इच्छाएं हैं- पहला है, मुझे फिल्म इंडस्ट्री में कुछ काम करना है या एक नामचीन एक्टर बनना है। दूसरा, मुझे कम्प्यूटर से जुड़ा कोई काम करना है क्योंकि बचपन से मुझे कम्प्यूटर में बहुत रुचि है, और उसने हार्डवेयर का कोर्स किया है और उससे जुड़े हुए उसके अंदर कुछ विचार भी हैं। तीसरा, उसके पिताजी ने उसे कहा, मैं तेरी सरकारी नौकरी लगवा दूंगा और इससे तुझे रिटायर्ड होने के बाद पेंशन भी मिलती रहेगी और तुम्हारा जीवन भी अच्छे से चलेगा।

अगर आप वहां होंगे तो क्या करेंगे?

अब मैं आपको बता रहा हूं कि मैं क्या करुंगा। अब यदि मैं एक्टिंग करता हूं और फेल हो जाता हूं तो वैसे कोई हार्ड या फास्ट रूल नहीं है कि मैं सफल नहीं होऊंगा, फिर भी मैं संभावना व्यक्त कर रहा हूं कि यदि ऐसा होता है तो मुझे बैकअप नहीं मिलेगा और घर वाले भी शायद सपोर्ट ना करें और खुद भी लगेगा शायद मैं असफल हो गया, तो मैं क्यों ना जो पिताजी कह रहे हैं वो कर लूं। उसमें जो दूसरी डिज़ायर है कि यदि मैं कम्प्यूटर में कुछ करना चाहूं तो ज़्यादा से ज़्यादा जो लोगों के पास पुराने कम्प्यूटर हैं उसे मैं खरीदूंगा और रिपेअर करके बाज़ार में बेच दूंगा, इसके लिए शायद लोग मेरा मज़ाक भी उड़ा सकते हैं कि यह तो कबाड़ी है। तो इन दोनों के अलावा मैं, पापा जो कह रहे हैं वही कर लेता हूं।

लेकिन मैं शायद खुश ना रहूं क्योंकि मैंने अपनी आंतरिक इच्छा को मार दिया। और मान लो मुझे एक्टिंग और कबाड़ी में से किसी एक को चुनना है तो मेरे पास दो विकल्प हैं। फीलिंग एक्टर बनने में ज़्यादा अच्छी है और कबाड़ी की दुकान में फीलिंग कम अच्छी है। लेकिन मैंने बचपन से ही कम्प्यूटर से प्यार किया है और मेरी उसमें दक्षता भी है। अब एक्टिंग में नाम, शोहरत और पैसा भी है जो एक आम आदमी का सपना होता है। तो मेरे पास अगर समय है तो मैं एक्टिंग पहले कर लेता हूं। और चीज़ें तो बाद में भी हो सकती हैं । अब देखिए होता क्या है, जिस काम में हमें अच्छी फीलिंग हो रही होती है, हम बिना कुछ सोचे उस दिशा में कदम उठा लेते हैं चाहे वो हमारे लिए ठीक है भी या नहीं, बस करना है। अब मान लीजिए कि आपने महाराष्ट्र से मुंबई की बस पकड़ी और मुंबई आ गए।

अब आप क्या करेंगे अपने फोटोग्राफ शूट करेंगे तथा उन्हें अलग-अलग विज्ञापन एजेंसियों में देंगे। इसमें एक बात सोचने लायक है कि एक तो हमारी इच्छा शक्तिशाली थी, अब वो और ही स्ट्रांग होती जा रही है और सपनों की दुनिया में मैं हीरो बन गया हूं, लेकिन रीयल में मैं हीरो नही हूं। अब आपके भेजे गए फोटोग्राफ से कुछ प्रोडक्शन हाऊस से आपको फोन भी आ गया। अब आपकी इच्छाओं कि स्पीड और बढ़ गयी। हो सकता है कि आपको एक्टिंग में सफलता मिल जाए, हो सकता है ना भी मिले, अंधेरा है, कन्फ्यूज़न है। क्यों है कन्फ्यूज़न? क्योंकि ना तो आपका एक्टिंग में कोई इंट्रेस्ट है और ना ही आपको कोई ज्ञान है, और ना ही आपको इसका कोई अनुभव है। बस अपना लुक या फीचर ठीक-ठाक देखा तो सोचा कि मैं हीरो बन गया। अब आप अगर साक्षात्कार देने जाएंगे तो आपको ज़ीरो मिलेगा क्योंकि ''आपको वो मिलेगा जो आप चाहते हैं या आपको वो मिलेगा जो आप हैं '' आप एक हीरो तो नहीं हैं। हज़ारों में प्रायिकता है कि शायद आपके अंदर हीरो छुपा भी हो जो आपको पता भी ना हो। ऐसे ही बहुत सारे लोग हैं जो सिर्फ भाग रहे हैं लेकिन उन्हें पता नहीं है कि वो क्या कर रहें हैं। बस बिना बिलीफ (ज्ञान व अनुभव) सबकुछ कर रहे हैं।

- क्रमशः....

-ब्र.कु. अनुज,डिफेन्स कॉलोनी दिल्ली

PEACE OF MIND - TV CHANNEL

Cable network service
"C" Band with Mpeg4 receiver
Frequency:4054,
Polarisation:Horizontal, Degree: 83
Symbol:13230, Satellite:INSAT 4A,
Peace of Mind: (Vision Shiksha)

DTH Services
Videocon D2H: Channel no. 497,
Reliance Big TV: Channel no. 171

Smart Phone Service
Android | Blackberry | iPhone | iPad | Tablet | Visit: http://pmtv.in

Mobile Audio Service
Airtel - 55231 - Rs.2 per day
Vodafone - 552013 - Rs 1 per day
Reliance - 56300123 Rs 1 per day

अगर आप पीस ऑफ माइण्ड चैनल चालु करवाना चाहते हैं तो अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - 9414151111, 8104777111

सूचना– ओम शान्ति मीडिया में सेवा के लिए हिन्दी व अंग्रेजी भाषा की जानकारी रखने व पत्रकारिता के अनुभवी भाइयों की आवश्यकता है। ई.मेल, वेबसाइट तथा सॉफ्टवेयर की भी जानकारी हो। ईश्वरीय सेवा के इच्छुक भाई अपना पूरा डाटा इस ईमेल पर भेजें-

Email- mediabkm@gmail.com

M-8107119445

प्रश्न: आत्माभिमानी स्टेज क्या है? बाबा कहते हैं कि अष्ट रत्न ही अन्त तक आत्माभिमानी बनते हैं। इसमें ऐसा क्या रहस्य है?

उत्तर: हमें ये ज्ञान तो मिल गया है कि मैं कौन हूँ, मैं आत्मा हूँ, परन्तु मैं कौन सी आत्मा हूँ - यह सत्य जानना बाकी है। और यह रहस्य समझ में आता है स्वमान के अभ्यास से। स्वमान में स्थित हुई आत्मा ही आत्माभिमानी है। जैसे मैं एक महान आत्मा हूँ..इस स्वमान का स्वरूप बनना माना जीवन में सर्व महानताएँ आना। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ - इस स्वमान का स्वरूप बनना माना सर्व शक्ति-सम्पन्न बनना, स्वराज्य अधिकारी बनना। मैं विजयी रत्न हूँ - इसका स्वरूप बनना माना माया पर व हर परिस्थिति पर विजय प्राप्त करना। आत्माभिमानी की दूसरी बात - आत्मा के सातों गुण जीवन में आ जाएं। ज्ञान, प्रेम, सुख, शान्ति, शक्ति, पवित्रता व आनंद। मैं ज्ञान-स्वरूप हूँ तो सम्पूर्ण अज्ञान नष्ट हो जाए। कर्म ज्ञान स्वरूप हो जाएं। असत्य पूर्णतः समाप्त हो जाए। मैं प्रेम स्वरूप हूँ। सबसे आत्मिक प्रेम हो जाए। घृणा ईर्ष्या द्वेष पूर्णतः समाप्त हो जाए। मैं सुख स्वरूप हूँ। आत्मा ईश्वरीय सुख से सम्पन्न रहने लगे। किसी भी बात या घटना का तनिक भी दुःख मन को स्पर्श न करे। मैं शान्ति स्वरूप हूँ तो अशरीरी पन द्वारा गहन शान्ति की अनुभूति रहे। हमारी शान्ति को कोई भी डिस्टर्ब न कर सके। हमारी शान्ति हमारी शक्ति बन जाए। मैं शक्ति स्वरूप हूँ। हम सर्व शक्ति सम्पन्न बन जाएं। भय का नामोनिशान न रहे। मैं पवित्र स्वरूप हूँ। तो हम सर्व विकारों से मुक्त बन जाएँ। भय का नामोनिशान न रहे। पवित्रता का तेज व पवित्रता की शक्ति हमारे ललाट से चमकती हो। मैं आनंद स्वरूप हूँ - हमें सदा आंतरिक खुशी रहे। अशरीरी पन के द्वारा हम निरंतर अतीन्द्रिय सुख में रहें। बार-बार अशरीरीपन के अभ्यास से, स्वमान के अभ्यास से व योग लगाते-लगाते हम अंत तक आत्माभिमानी बन सकते हैं। यही अध्यात्म की सर्वश्रेष्ठ स्थिति है। इसलिए अष्ट रत्न ही इसे प्राप्त करते हैं।

प्रश्न: मैं एक गृहस्थी माता हूँ। 10 वर्ष से ज्ञान में हूँ। मेरे घर में सदा झगड़ा होता रहता है। पति को अत्यधिक क्रोध है। दोनों बड़े बच्चों से सदा ही उनकी कहा सुनी होती रहती है। अपने घर में मुझे शान्ति लानी है। मैं क्या करूँ?

उत्तर: आप स्वयं को घर की ईष्ट देवी समझकर चलो। सारा दिन कम से कम 10 बार यह याद करना कि मैं शान्ति की देवी हूँ और मास्टर ज्ञान सूर्य हूँ। मेरे अंग-अंग से पूरे घर में शान्ति की किरणें फैल रही हैं। आप घर के झगड़े में सम्मिलित न हो। आप अधिक समय शान्ति में रहें और अभ्यास करें कि मैं शान्त स्वरूप आत्मा हूँ और आपके बच्चे व पति तीनों आत्माएँ हैं और वे भी शान्त स्वरूप हैं। भोजन बनाते समय संकल्प करें कि इस पवित्र भोजन को खाकर इन सबका मन शान्त हो जाए। सवेरे उठकर घर में योग के व शान्ति के वायब्रेशन्स फैलाओ ताकि जब वे उठें तो उन्हें अच्छी फीलिंग हो। उनकी अनुपस्थिति में घर में

ज्ञान के गीत बजाएँ व स्वयं को आनंद की स्थिति में रखें ताकि घर में अच्छे वायब्रेशन्स फैलें। अपने घर में 3 बार बीस-बीस मिनट बैठकर योग करें। और जो आपकी बात मानता हो उसे चुप रहने की प्रेरणा दें। ये सब 2 मास तक करें। अवश्य आपके परिवार में शान्ति आ जाएगी।

प्रश्न: आप भारत की क्या सेवा करते हैं। धर्मों ने तो संसार में हिंसा ही फैलाई है। इसलिए धर्म की ओर नई पीढ़ी आकर्षित नहीं है। देश को अब धर्म की नहीं किसी और चीज़ की आवश्यकता है।

उत्तर: आपने सच कहा, देश को धर्म की ज़रूरत नहीं। ज़रूरत है अध्यात्म की। अध्यात्म सर्वमान्य सत्य है। अध्यात्म से ही जीवन में नैतिकता आती है। सच्चा धर्म तो हिंसा नहीं सिखाता है। जहाँ धर्म में हिंसा है वहाँ धर्म का पवित्र स्वरूप लोप हो जाता है और ऐसा धर्म अपने अनुयायियों को सुख-शान्ति नहीं दे सकता। सत्य धर्म वही है जिससे मनुष्य का जीवन धर्म के अनुरूप हो। विचार कीजिए - यदि घर-घर में शान्ति हो, निःस्वार्थ प्रेम हो, पवित्रता हो, धन की मारामारी न हो तो कितने ही कोर्ट केस नहीं होंगे, कहीं रेप नहीं होंगे, हिंसा नहीं होगी, तनाव नहीं होगा तो देश में कई समस्याएँ होगी ही नहीं। यही ब्रह्माकुमारियाँ सिखा रही हैं। सिखा ही नहीं रहीं बल्कि करोड़ो लोग इसका पालन कर रहे हैं - यह सच्ची देश सेवा है। सोचें...यदि हर मन में ईमानदारी हो, संतोष हो, सुख लेने-देने की भावना हो, त्याग व सहनशीलता हो, पवित्रता व सच्चाई हो तो देश का कैसा स्वरूप होगा। हम यही कर रहे हैं। यही देश की सच्ची सेवा है। जो लोग हॉस्पिटल, कॉलेज या अन्य रूप से सेवा भाव दिखा रहे हैं उनमें सेवा भाव नहीं, धन कमाने का भाव है। मनुष्य को शिक्षित करना – उन्हें अच्छे संस्कार देना – यह अलग ही बात है – और यही देश सेवा हम कर रहे हैं। लोग नहीं जानते कि यदि एक करोड़ लोग पवित्र बन जाएँ तो ये भारत भूमि धन-धान्य से भरपूर हो जाए। यहाँ न प्राकृतिक प्रकोप हों, न अकाल पड़े, न रोग हों, न शोक हो, न कोई रोये और न मन परेशान हो। यही सेवा अर्थात् भारत को सुख, शान्ति व समृद्धि युक्त स्वर्ग बनाने की ब्रह्माकुमारियाँ कर रही हैं। और ज्ञान-बल, योग-बल व पवित्रता के बल से अब हमारा देश स्वर्ग बनेगा ही।

प्रश्न: मैं कई वर्ष से ज्ञान में हूँ, परन्तु मेरा पति धारणा के लिए मानता नहीं। परन्तु अब मैं पवित्र बनना चाहती हूँ - विधि बतायें...?

उत्तर: पवित्र बनना, ये प्रभु आज्ञा है। पवित्रता ही हमारी मूल स्थिति है। अब ये 5000 वर्ष का खेल पूर्ण हो रहा है। सबको पवित्र बनकर घर जाना ही है। इसलिए किसी भी तरह दृढ़ प्रतिज्ञा करके, सहन करके, इस प्रभु आज्ञा को अपनाना ही है। मनुष्य में वासनाएँ अति में हैं, पवित्र बनना उनके लिए कठिन होता है, क्योंकि वासनाएँ उन्हें सताती हैं। वासनाएँ पूर्ण न हों तो वे क्रोध में पागल हो जाते हैं। आपको निम्न विधि अपनानी है। भोजन बनाते समय सच्चे मन से 100 बार याद करना है कि मैं परम पवित्रात्मा हूँ। इससे भोजन पवित्र हो जाएगा। खिलाते समय संकल्प करना कि इस भोजन को खाकर इस आत्मा का चित्त पवित्र हो जाए। सवेरे उठते ही 7 बार संकल्प करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और ये आत्मा मेरी सम्पूर्ण सहयोगी है। 10 मिनट प्रतिदिन सवेरे उन्हें पवित्र वायब्रेशन्स देना व संकल्प देना कि तुम एक पवित्र आत्मा हो, भगवान के बच्चे हो, अब पवित्र हो जाओ। ये सब लगातार 3 मास करना। साथ में उस आत्मा के लिए प्रतिदिन एक घण्टा योग भी करना तो शिव बाबा आपकी श्रेष्ठ इच्छा अवश्य पूर्ण करेंगे।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com